FEEDBACK
NATIONAL WEBINAR ON HIMALAYAN DAY
9 September 2023

Geographical Society of Central Himalaya
www.gsch.co.in

Professor U.C.Gairola

H.N.B.Garhwal University, BGR Campus Pauri.

"हिमालय का जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव, चर्चा लाभदायक रही।सोसायटी को आफलाइन भी कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। छात्रों की सक्रिय भागेदारी भी सुनिश्चित हो तो अच्छा है।"

Mr.Pawan Singh

HNB Garhwal University Srinagar.

Main points to be suggested on Himalaya Day: There are various types of medicines available in the Himalayas which are continuously being exploited by humans but it is as if they are not contributing to these natural forests in any way and they are continuously exploiting various natural resources which ne9/10/2023 8:26:30

Mr.Nikesh Rana

Government degree college sahar dehradun shahar

सर्वप्रथम में धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस प्रोग्राम को आयोजित करवाया इस प्रोग्राम के तहत हमें अपनी हिमालय के बारे में बहुत सारी ऐसी जानकारी प्राप्त हुई जो वास्तव में डरावनी है यदि हम अभी कुछ ना कर पाए तो भविष्य में न जाने क्या-क्या कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा हमें जागृत होना पड़ेगा और सबको आने वाली कठिनाइयां आने वाली मुश्किलों के बारे में अवगत कराना पड़ेगा यदि इस वक्त हमने कुछ फैसला न लिए तो भविष्य बहुत ही डरावना होने वाला है

Dr.Kanhaiya Lal Gupta

Assistant professor Geography GDC PAUKHAL TEHRI GARHWAL Uttrakhand 249161

मुख्य वक्ताओं द्वारा जिस प्रकार हिमालय की संवेदनशील, आपदा बारंबरता तथा नदी जल प्रवाह में लगातार कमी, हिमानी क्षेत्र से निकलने वाली नदियों की संख्या में तेजी से गिरावट आने के बारे में प्रकाश डाला गया। हिमालय एक बेहद संवेदनशील भाग है जिसे यहां के स्थानीय लोगों के साथ मिलकर उन्हें स्थानीय पर्यावरण के बारे में जागरुक किए जाने की आवश्यकता है कयोंकि स्वस्थ्य पर्यवरण के लिए हिमालय कितनी जरूरी है तभी उसका संरक्षण एवं संवर्धन किया जा सकेगा क्योंकि जिस तरह से प्राकृतिक क्षेत्र एवं नदी के तटवर्ती भागों में मानव लगातार हस्तक्षेप कर रहा है

से पता चलता है कि आने वाले समय में हिमालय एक गंभीर संकट से गुजरेगा।इसलिए समय रहते हमें भावी नियोजन तैयार करने की जरूरत है।इस पुनीत कार्य में स्थानीय लोगों के सहयोग से है धरातल पर लाया जा सकता है। मैं कहना चाहूंगा कि जब तक हिमालय के मूल निवासी लोग हिमालय की प्राकृतिक संपदा है को नहीं समझेंगे उसके महत्व को नहीं समझेंगे तब तक उसके संरक्षण के बारे में जागरूक होने की भावना से निष्क्रिय रहेंगे, क्योंकि एक व्यक्ति को जब पता चलता है कि उसके आसपास की जो तत्व हैं अर्थात संसाधन है वह कितना महत्वपूर्ण, उपयोगी और लाभकारी है के बारे में सचेत होना बेहद जरूरी है। क्योंकि आज का आर्थिक मानव बिना लाभ के किसी भी प्रकार की क्रिया में सहयोग नहीं करता तो हमें अपने आसपास के पर्यावरण मिट्टी जल और विभिन्न प्रकार की हिमालययी जड़ी बूटी जो स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ साथ आर्थिक रूप से लोगों को लाभान्वित करती हैं। यदि विभिन्न एजेंसियों द्वारा सुदूरवर्ती क्षेत्र के लोगो को जागरूकता कर हिमालय से होने वाले लाभ के बारे में जागरूक करें तो लोग उसके संरक्षण एवम् संवर्धन के लिए स्वतः ही संज्ञा लेना प्रारंभ कर देंगे

Dr.Indar Singh Kohali

Government Post Graduate College Gairsain, Chamoli Department of Geography Assistant Professor All presentation was good

Mr Navin Rai S. V. G. P. G. C. LOHAGHAT CHAMPAWAT Geography Research scholar Very informative session

Mrs. Priyanka Negi HNB Garhwal A Central University Srinagar Garhwal Uttarakhand Geography Research Scholar

All speakers were very good.all lectures were very informative..we learn so many things and facts about Himalaya by his lectures.

Dr.Babita Kohali GGIC Nandan agar (Chamoli) Secondary education Lecturer

All speaker was vood & also meaningfull webinar.

Ms. NEHA RANI SOBAN SINGH JEENA UNIVERSITY ALMORA,UTTRAKHAND, INDIA GEOGRAPHY RESEARCH SCHOLAR

"मुख्य वक्ता प्रोफेसर जीवन सिंह रावत ने बताया कि आज वह दिन है जब हमें हिमालय के बारे में चिंतन करना चाहिए।किस तरह हिमालय में ग्लोबल वार्मिंग से जलवायु परिवर्तन का प्रभाव देखने को मिल रहा है, हम कितना वन दोहन कर रहे हैं जिससे भूस्खलन बाढ़ और जोशीमठ जैसी घटनाएं हिमालय में हो रही है। इसके जिम्मेदार हम सभी हैं किस तरह हिमालय में वर्षा के बजट में हर साल कमी आ रही है और हिमालय में उन्होंने इस विषय पर कहा दिया कि सदा वाहिनी नदियां मौसमी नदियों में बहती रही है और भूमिगत जल का स्तर बहुत तेजी से गिर रहा है इस संबंध में नदियों की पुनः सदानीरा बनाने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम अपने की आवश्यकता है । अन्यथा ग्लोबल वार्मिंग की बहुआयामी प्रभाव से निपटना मुश्किल होगा।

उन्होंने कहा कि भूगोल को जानने के लिए टेक्नोलॉजी को अपडेट करना होगा। कार्यक्रम को आगे बढ़ते हुए प्रोफेसर विशंबर सती जी ने जलवायु परिवर्तन के बारे प्रो0 जे एस रावत के व्याख्यान को समराइज करते हुए कहा कि मानव को प्रकृति पर कोई भी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए ।ग्लोबल वार्मिंग से वनस्पति रेखा, वृक्ष लाइन, हिम रेखा व भीम आवरण

तथा नदियों की सदा निरता के संबंध में विषद विवरण दिया ।ग्लोबल वार्मिंग के कारण लगातार ग्लेशियर खिसकने से गंगा, यमुना और काली नदी का जलस्तर कम होता जा रहा है। इस कारण उत्तराखंड की 353 गैरहिमानी नदियों (जिनका उद्गम स्थल हिमालय नहीं है) में सूखे का संकट मंडराने लगा है। वैज्ञानिकों को अंदेशा है कि यदि इसी तेजी से नदियों का जलस्तर कम होता रहा तो आने वाले 30 सालों में कई नदियां विलुप्ति हो सकती हैं। कुविवि के भूगोल विभागाध्यक्ष जेएस रावत का कहना है कि नदियों के संरक्षण को अथॉरिटी का गठन होना चाहिए। बड़ी नदियों के संरक्षण के लिए छोटी जलधाराओं को बचानाआवश्यक है! नदियों को बचाने की जरूरत हैं !मैं पूरी तरह से प्रो. जीवन रावत सहमत हूं"

Dr.Abhay Krishna Kalidas Vidyapati Science College Uchhaith Benipatti Madhubani Bihar Sociology Guest Assistant professor

Every natural thing has its own setting. Which is disturbed by the human beings for their greeds. Needs can be fulfilled but not greeds(Mahatma Gandhi). We think that we can overcome over nature but we forget that we are only a part of the existing nature and part is always less than the whole. Due to various so called development activities we have disturbed the whole Himalayas regions, and recent developments activities has its side effects in the form of disbalancing the natural world when we know the origin of maximum river is from Himalayas.Disturbing Himalayas means disturbing the whole river system which have a huge cost to human beings. So we need to think about how we control our greeds as soon as possible.

Dr.Niklesh kumar Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya (A Central University) Sagar, M.P. Population Research Centre Investigator

"Very congratulations to Geographical Society of Central Himalaya for organising National Webinar Uttarakhand occasion of Himalayan day on 9th September. Very nice and effective lecture given by invited speakers Prof. J S Rawat and Dr. Rajendra Singh about topic of ""Impect of anthropogeniclly accelerated climate change in Himalaya"" and development process in the laser Himalaya region of Uttarakhand. I am also thankful to all participants whichever is joined seminar.

The GSCH aims at improving the academic atmosphere committed to Geography on a disciplinary level on one hand and strives for practical applications such as suggesting government on issues of development and environmental conservation etc.

Thanks to all Organising committee members of GSCH."

Dr. Lata Kaira Swami Vivekanand Government Post Graduate College, Lohaghat, Champawat Geography Associate professor

हिमालय दिवस पर हमें संकल्पित होना चाहिए कि हम हिमालय को बचा सकें। हिमालय को बचाने के लिए सरकार ने यहां की भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर नीतियां बनानी चाहिए । हमें अपनी प्राचीन संस्कृतियों परंपराओं एवं नियमों को भी लागू करना चाहिए । हिमालय क्षेत्र की मुख्य समस्याओं को सुलझाने के लिए भी विशिष्ट प्रकार की नीतियां बनानी पड़ेगी। हिमालय क्षेत्र में सड़कों एवं भवन निर्माण के लिए विशिष्ट प्रकार की नीतियां लागू करनी होगी। पर्यटन उद्योग को बढ़ावा तो देना पड़ेगा लेकिन पर्यटन ऐसा होना चाहिए जो क्षेत्र को नुकसान ना पहुंचाएं। हिमालय क्षेत्र के ग्लेशियर और नदियों को बचाने के लिए मुहिम जारी रखनी होगी।

Mr. Mandeep Singh Department of Geography HNB Garhwal University Srinagar Uttarakhand Department of Geography HNB Garhwal University Uttarakhand Research Scholar

Nyc session very informative

Dr. Sweta Pant EDUCATION DEPARTMENT Geography LECTURER

" वक्ता महोदयो के द्वारा दिया गया सबसे अच्छा सुझाव सतत पोषणीय विकास को ध्यान में रखते हुए हिमालय परिस्थिकी को संरक्षित किया जा सकता है

" Dr. BHUVNESH KUMARI RLSMDC JASPUR USNAGAR GEOGRAPHY Assistant professor

"हिमालय दिवस पर आयोजित वेबीनार में आज हिमालय दिवस को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया हिमालय दिवस पर आयोजित एक सेमिनार में मुख्यताओ ने हिमालय के संरक्षण के लिए अपने-अपने मत इस प्रकार रखें ।

हिमालय दिवस पर जियोग्राफीकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय के बैनर तले समिति के संरक्षक प्रोफेसर कमलेश कुमार व अध्यक्ष डॉक्टर अनीता रूडोला जी के सानिध्य में हिमालय में मानव जनित रूप से त्वरित जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर आयोजित वेबीनार में भूगोलवेत्ताओ ने हिमालय की मौजूदा स्थिति पर सर्वप्रथम कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉक्टर रौतेला जी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और आज वेबीनार के मुख्य वक्ता डॉक्टर जी एस रावत जी का स्वागत किया तथा उन्होंने समिति के बारे में विस्तार से अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया समिति कब बनी और समिति का मुख्य उद्देश्य क्या है और आने वाले समय में हिमालय को बचाने के लिए कौन-कौन से प्रयास कर सकते हैं इस विषय को लेकर के यह वेबीनार आयोजित की गई थी जिसमें मुख्य वक्ता रहे डॉक्टर जी एस रावत जी जिन्होंने गंभीरता से कहा कि हमें हिमालय के चिंतन के लिए सोचना होगा हमें छोटी बड़ी नदियों के उद्गम और पानी के उपयोग के बारे में भली-भांति सोचना होगा

हिमालय में ग्लोबल वार्मिंग से वनस्पति रेखा वृक्ष लाइन हिम रेखा पर भीम आवरण तथा नदियों की सदा निरंतरता के संबंध में विशद विवरण उन्होंने दिया सदाबहिनी नदियां मौसमी नदियों में बहती रही है और भूमिगत जल का स्तर बहुत तेजी से गिर रहा है इस संबंध में नदियों को पुनः सदा निरन्तर बनाने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम की आज भी जरूरत है अन्यथा ग्लोबल वार्मिंग की बहु आयामी प्रमुख प्रभाव से निपटना मुश्किल हो जाएगा और आने वाली पीढ़ी का जीवन पूर्णतया संकट में पड़ जाएगा।

हिमालय के संरक्षण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़ना होगा और जलवायु संकट पर विचार करने की आज भी बहु आयामी आवश्यकता है।

"

Ms. Manju arya S. S. J Campus Almora Kumaun University Nainital Geography Research scholar

"हिमालय में मानव जनित रूप से त्वरित जलवायु परिवर्तन का प्रभाव किस तरह हिमालय में ग्लोबल वार्मिंग से जलवायु परिवर्तन का प्रभाव के रूप मे देखने को मिल रहा है, यह अविज्ञ नही है। हम कितना वन दोहन कर रहे हैं जिससे भूस्खलन बाढ़ और जोशीमठ,मसूरी, हिमांचल जैसी घटनाएं हिमालय में हो रही है। इसके जिम्मेदार हम सभी हैं किस तरह हिमालय में वर्षा के बजट में हर साल कमी आ रही है और हिमालय में ग्लोबल वार्मिंग से वनस्पति रेखा, वृक्ष लाइन, हिम रेखा व भीम आवरण तथा सदा वाहिनी नदियां मौसमी नदियों में बदल रही है और भूमिगत जल का स्तर बहुत तेजी से गिर रहा हैं , जिस हेतु सभी को चिंतन मनन और सामूहिक रूप से एक जुट होने की नितांत आवश्यकता है।

सबका साथ ही,सबका भविष्य भी और सबका विकास भी निर्धारित सुनिश्चित करेगा। "

Dr. Siraj Ahmad Govt. Degree College Jaspur, (U.S. Nagar) Geography Assistant Professor

हिमालय दिवस पर मुख्य वक्ताओ विशेषकर प्रो० जे 0 एस ० रावत सर एवं डा ० आर ० एस ० भण्डारी जी द्वारा दिये गये व्याख्यान हिमालय के सन्दर्भ में बहुत ही सारगर्भित थे। प्रो ० रावत सर ने जलवायु परिवर्तन के कारणों एवं निदान के सन्दर्भ में बहुत सूक्ष्म जानकारी प्रदान की। हिमालय को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है, के बारे में बताया उन्होंने नदियों के संरक्षण पर भी सुझाव दिये। लगातार भूमिगत जल के संकट को समझाया। इस वेबिनार के माध्यम से एक जागरुकता का संदेश दिया गया, जिससे हिमालय को सुरक्षित एवं संरक्षित रखा जा सके। यह हमारे लिये बहुत उपयोगी था।

Dr. Jitendra kumar Bedi Dr. C.V. Raman University Bilaspur Geography Student

व्याख्यान में हिमालय क्षेत्र में भौगोलिक परिवर्तन के जो भी कारक हैं जैसे जलवायु ,मृदा,जैव विविधता आदि के साथ क्षेत्र विकास हेतु वित्त नियोजन पर भी विशेष और वृहद चर्चा की गई जो आवश्यक और सार्थक रहा प्रो.जीवन एस. रावत जी का व्याख्यान तैय्यारी के साथ और तत्थों भरा रहा जो मेरे साथ सभी प्रतिभागियों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगा

Dr. Dr. Mukesh Naithnani Bal Ganga Degree College Sendul kemar Tehri Garhwal Geography Assistant professor

हिमालय का संरक्षण करने के लिए मानव को जल, जंगल,जमीन के प्रति विशेष ध्यान देने की जरूरत है जिससे पर्यावरण संरक्षण हो सके और पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए आम जन को जागरूक हो कर हिमालय के संरक्षण करने का संकल्प लेना चाहिए, आज हिमालयी छेत्रो में ग्लेशियर कम हो रहे है साथ ही नेचुरल जल स्रोत सूख रहे है जंगलो में दावाग्नि से हजारों बेजुबान पशु पक्षियों की अकाल मौत हो रही है अवैज्ञानिक ढंग से पेड़ो का कटान सड़को का निर्माण से भूस्खलन, बाढ़, जैसी आपदाओं का जन्म हो जाता है जिससे मानव जगत से लेकर हिमालय छेत्र को हानि उठानी पड़ रही हैं जिसका खामियाजा मानाव को भुगतना पड़ेगा। इसके लिए सभी लोगो को आगे आ कर जागरूकता कार्यक्रम चला कर धरातल पर कार्य करने की जरूरत है।

Dr. Ashok Kumar Meena HNB Garhwal University, Srinagar Garhwal, Uttarakhand Department of Environmental Sciences PhD Scholar

It was an enlightening and captivating event that provided a deep insight into the majestic Himalayan region. The speakers were highly knowledgeable and passionate, sharing their expertise on various aspects of the Himalayas, including its rich culture, biodiversity, and environmental challenges. The webinar also shed light on the importance of preserving the Himalayas and the need for sustainable practices to protect its fragile ecosystem. Overall, it was an educational and inspiring experience that left me with a renewed appreciation for the beauty and significance of the Himalayas.

Dr. Arvind Singh Yadav Soban Singh Jeena University Almora Department of Geography Assistant Professor

It was good session to attend and enhanced the knowledge of participants about Himalayas. Some research scholars must be provided chance to present their studies regarding Himalayas.

Ms. Soni negi ISR GDC Government Degree College Pokhal tehari Gharwal "जिन स्थलों पर दो प्लेटें आपस में टकराती हैं वहां इतना अधिक दबाव पैदा होता है कि उससे सतह पर विशाल सिलवटें पड़ जाती हैं जिनसे ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं का निर्माण होता है। ... पृथ्वी के बीच प्लेटों की सबसे बड़ी इस टक्कर से ही दुनिया की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला हिमालय व तिब्बत पठार का निर्माण हुआ।हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र और क्षेत्र को संरक्षित करने के उद्देश्य से हर साल 9 सितंबर को हिमालय दिवस (Himalaya Day) मनाया जाता है। आम जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने और संरक्षण गतिविधियों में सामुदायिक भागीदारी लाने के लिए हिमालय दिवस भी एक उत्कृष्ट दिन है।

Dr. Narender Panghal Govt. PG College Karnaprayag, Chamoli Department of Geography Assistant Professor

Very deep and informative lectures

Ms. Archana Soban Singh Jeena University Almora Uttarakhand Geography Research scholar

"हिमालय दिवस पर आयोजित विशेष वेबिनार का आयोजन ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ हिमालय की ओर से किया गया। जिनके कुछ प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं सर्वप्रथम प्रोफेसर अनीता रौतेला mam द्वारा vikhayan किया गया जिसमें उन्होंने हिमालय का विस्तार और प्राचीन नियतिवादी विचारधारा के samapat होने एवम नए विचारों का उल्लेख किया गया। केदारनाथ आपदा 2013 की याद दिलाकर mam ने सभी को पुन: सचेत होने को कहा।

प्रोफेसर जीवन सिंह रावत सर द्वारा दिया गया व्याख्यान bhaut ज्ञानवर्धक था, सबसे पहले सर ने पृथ्वी के कोर, क्रस्ट, मेंटल को bhraama, विष्णु, महेश जैसे विशेषण से अपना वाख्यान शुरू किया सर का विषय ""impact of climate change in Himalaya"" था । सर ने अल्मोड़ा की नदियों व ग्लेशियरो पर अपना कार्य व अनुभव हम सब लोगों से साझा किया। व बताया कि किस प्रकार आज उत्तराखंड की नदिया, हिमानिया सिकुड़ रही हैं। इन्हें समय रहते बचाने की आवश्यकता है । सर ने अल्मोड़ा की नदियों कोसी, शिप्रा, सुयाल आदि के बारे में पहले और अब मैं आए अन्तर को बताया। सर द्वारा दिया गया ये व्याखान उपयोगी और महत्वपूर्ण रहा। मैं सर को आभार देना चाऊंगी।

मेरे अनुसार कुछ सुझाव:

1 ऐसे वर्कशॉप और ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों parkar se कराए जाए जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग इससे जुड़े।

2 जल आयोग का गठन, और उसमें नदियों के साथ ही नौले गाढ़ ghadhare भी शामिल किए जाएं क्योंकि ये वाटर रिचार्ज के अच्छे श्रोत होते हैं।

3 विभिन्न निर्माण कार्यों के दौरान उसके मलबे को नदियों में ना डाला जाए।

4 वर्षा जल संग्रहण

Dr. Kamleshwar Tripathi Govt. PG College Ranikhet, Almora, Uttarakhand. Department of Geography Assistant Professor

हिमालय न सिर्फ भूगर्भिक दृष्टि से बल्कि जलवायू एवं पारिस्थितिकीय दृष्टि से भी संवेदनशील है। ऐसी विषम स्थिति में इस सोसायटी की भूमिका वहुत महत्वपूर्ण है। सभी सम्मानित वक्ताओं द्वारा जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालय में हो रहे बदलाव पर विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई। ऐसे और भी बेबीनारों को आयोजित करने की आवश्यकता है। डॉ राजेन्द्र भंडारी सर की तरह अधिक से अधिक केश स्टडी करने की जरूरत है। इस चुनौती का सामना सरकार, वैज्ञानिकों , बुद्धिजीवीयों के साथ जनभागीदारी को बढ़ाकर किया जा सकता है।

Dr. Rajiv Tripathi Pt. Jawahar Lal Nehru College Banda Geography Department Assistant Professor

मुख्य वक्ताओं द्वारा दिये गये अपने व्याख्यानों में जैसा बताया गया कि आर्थिक विकास, नगरीकरण, पर्यटन, मानवीय गतिविधियों इत्यादि के द्वारा हिमालय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। भूकम्प व भूस्खलन यद्यपि प्राकृतिक आपदायें हैं लेकिन इनकी बारंबारता बढ़ने का कारण मानवीय गतिविधियां हैं। आज आर्थिक विकास की होड़ में एवं पर्यटन को बढ़ावा देने के कारण लगातार वनो का निर्जनीकरण हो रहा है जिससे हिमालय की पारिस्थितिकी असन्तुलित हो रही है। जलवायु परिवर्तन से नदियों के स्रोतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है और नदियों के स्रोत सिकुड़ते जा रहे हैं। हिमालय की पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखना है तो मानव को भी अपनी गतिविधियों को पारिस्थितिकी के अनुकूल करना होगा। सभी व्याख्यान बहुत ही प्रेरणादायक एवं रुचिकर थे।

Dr. Pushpa, Nainital Assistant Professor

पर्वतीय क्षेत्रों में भवन निर्माण एवं सड़क निर्माण हेतु भौगोलिक क्षेत्रों की भू-आकृति संरचना की जांच एवं पहचान करनीं चाहिए।हिमालय के संरक्षण हेतु जमीनी स्तर से प्रयास करने होंगे।पर्वतीय एवं मैदानी भागों के विकास हेतु अलग-अलग नीतियां होनी चाहिए। हिमालयी क्षेत्रों के विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा पृथक विभाग /मंत्रालय बनाया जाना चाहिए ।यू०जी०सी० जैसी स्वायत संस्थाएं जो कि रिसर्च प्रोजेक्ट को चयनित कर उन्हें वित्तीय मदद देती है उन्हें हिमालय संरक्षण संम्बन्धित proposal को और अधिक मात्रा में चयनित कर शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।

Dr. Mahima Rathore Vikram University Ujjain Madhya Pradesh Geography Researcher

Very informative and useful knowledge

Ms. Suman Govt. P. G. College Lohaghat Champawat Geography Department Resarch Scholar

"2015 में, 9 सितंबर को आधिकारिक तौर पर उत्तराखंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा हिमालय दिवस के रूप में घोषित किया गया था।

हिमालय प्रकृति को बचाने और बनाए रखने और प्रतिकूल मौसम की स्थिति से देश की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

फूलों और जीवों की जैव विविधता में समृद्ध होने के अलावा, हिमालय श्रृंखला देश में बारिश लाने के लिए भी जिम्मेदार है।

आम जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने और संरक्षण गतिविधियों में सामुदायिक भागीदारी लाने के लिए हिमालय दिवस भी एक उत्कृष्ट दिन है।

इस बार नौ हिमालयी राज्यों के साथ-साथ बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली में विशेष आयोजन होंगे।

हिमालय दिवस 2022 को 'हिमालय तभी सुरक्षित रहेगा जब उसके निवासियों के हितों की रक्षा होगी' थीम के तहत मनाया जा रहा है।

webinar dwara mujhe nayi jankari himalya diwas par prapt hui,iske liye me sabhi sammanit speakar ki abhari hu.dhanyawad."

Ms. Pradeep Negi HNB Garhwal UniversityGeography Research scholar "

9 सितंबर को हिमालय दिवस के अवसर पर सभी वक्ताओ ने बहुत ही महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक जानकारी दी। इस वेबनार के माध्यम से हमें हिमालय को और अधिक समझने का मोका मिला।

Dr. Dr.Archana Nautiyal Bhakt Darshan Govt.P.G.College Jaiharikhal, Pauri Garhwal, Uttarakhand Geography Assistant Professor

हिमालय दिवस पर आयोजित व्याख्यान में हिमालय पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर बात की गयी| इसके कारण भूस्खलन, बाढ जैसी आपदायें आ रही हैं जिससे प्रतिवर्ष जन -धन की अपार हानि हो रही है| हिमालय की सुरक्षा के लिए आवश्यक एवं प्रभावी कदम उठाये जाने आवश्यक हैं | इसके लिए मानव को प्रकृति के साथ अनावश्यक हस्तक्षेप रोकना होगा |

Dr. NISHA Government Post Graduate College Gairsain, Chamoli Geography Assistant professor

बहुत अच्छा प्रस्तुतीकरण था बहुत से नए तथ्यों के बारे मे जानकारी प्राप्त हुई जो कि हमारे लिए लाभकारी होगा। हिमालय वासियों और विश्व के सभी लोगों को इस बात को समझने की आवश्यकता है कि हम जिस जगह निवास कर रहे हैं उस पृथ्वी के प्रत्येक परिदृश्य या भाग की सुरक्षा करना भी हमारी जिम्मेदारी है। हिमालय हमारे देश तथा विश्व का महत्वपूर्ण विभाग है। वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग के कारण इस भूभाग मे विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होने लगी हैं जो पूरी मानव जाति के लिए खतरनाक है। आवश्यकता है कि हमे अपने स्तर से छोटे छोटे प्रयास करके और लोगों को इस ओर जागरूक करके इस समस्या को और अधिक बढ़ने से रोकना चाहिए।

Mrs. Kutti Rawat Hemwati Nandan Bahuguna Garhwal University Department of geography Research scholar

"सभी व वक्ताओ के माध्यम से हिमालय की सांस्कृतिक धरोहर के बारे में उनके ज्ञान से प्रेरणा ली , इसे संरक्षित रखने का महत्व समझा।हिमालय के पर्यावरणीय संरक्षण के संदर्भ में सुझाव:

वन्यजीव संरक्षण: वन्यजीवों के संरक्षण के लिए स्थानीय लोगों को शिक्षा देना और उन्हें संरक्षण के साथ साथ जीविका साधने का अवसर प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

जल संरक्षण: जल संकट के संदर्भ में जल संरक्षण के उपायों को प्रमोट करना चाहिए, जैसे कि बारिश के पानी को संचित करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के उपाय।

वनस्पति संरक्षण: हिमालय के वनस्पति संरक्षित करने के लिए वन्यजीव संरक्षण के साथ ही वनस्पति संरक्षण भी महत्वपूर्ण है। जलवायु परिवर्तन से संबंधित प्रयासों को बढ़ावा देना चाहिए।

जागरूकता: लोगों को हिमालय के पर्यावरणीय महत्व को समझाने और उन्हें संरक्षण में भागीदार बनाने के लिए जागरूक करना चाहिए।

संगठन: संगठनों को मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि संरक्षण कार्यों को आधारिकता और आवश्यक संसाधन प्राप्त हो सके।

हिमालय के पर्यावरणीय संरक्षण में सभी की भागीदारी आवश्यक है"

Dr. SARLA BHARDWAJ Harsh Vidya Mandir P.G College Raisi,Haridwar, UK GEOGRAPHY Assistant Professor

"हिमालय' संसार के पर्वतों में सबसे ऊंचा है। इसे 'गिरिराज' भी कहते हैं। हिमालय दो शब्दों से बहा है- हिम +आलय। 'हिम' का अर्थ है- बर्फ और 'आलय का अर्थ है- घर। हिमालय के ऊपर साल भर बर्फ जमी रहती है।

हिमालय भारत के उत्तर में सहस्त्रों मील तक फैला हुआ है। इसकी ऊंची चोटियाँ और दिल को हरने वाली घाटियाँ बहुत प्रसिद्द हैं। इसकी प्राकृतिक सुन्दरता सभी का मन हर लेती है। हिमालय में सबसे बड़ी कश्मीर की घाटी है। कश्मीर को धरती का स्वर्ग भी कहा जाता है। इसमें स्थान-स्थान पर फूल खिले रहते हैं और सर्वत्र स्त्रोत और जल-प्रपात दिखाई देते हैं। कश्मीर इतना आकर्षक है कि वहाँ जाकर लौटने को दिल नहीं चाहता है। इसीलिए कश्मीर को 'धरती का स्वर्ग भी कहा जाता है। विश्व के पर्वतों में हिमालय सबसे श्रेष्ठ स्थान रखता है। यह भारत, पाकिस्तान और चीन के मिलनस्थल सियाचिन के पास से प्रारंभ होकर निरंतर पूर्व की ओर बढ़ता गया है। हिमालय पर्वतश्रृंखला ही नहीं है, यह वह सीमा रेखा भी है जहाँ से भारतीय सभ्यता और संस्कृति एशिया के उत्तरी हिस्से से अलग होती है। यह भारत का मुकुट है; यह देवभूमि है। हिमालय का आकलन सिर्फ़ जड़ पर्वत के रूप में करना अन्याय होगा।

जिस हिमालय से गंगा-यमुना की धाराएँ निकलकर संपूर्ण भारत को भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक शांति प्रदान करती हैं, जो हिमालय भारत का सजग प्रहरी है और जो हिमालय युगों से भारतीय इतिहास का मूकद्रष्टा रहा है, उसे मात्र जड़ पर्वत मानना सही नहीं है। हिमालय सिद्धों और तपस्वियों की भूमि है। ज्ञान और अध्यात्म के अक्षय भंडार इसके कण-कण में छिपे हुए हैं। यह भारत की कीर्तिपताका का उज्ज्वल, उत्तम और उच्च रत्न है।

हिमालय हमारा गर्व है, हमारी मर्यादा है। "

Ms. Manisha Government degree college Dehradun sehar

"हिमालयन भारतीय संस्कृति परयादीप पर्वत श्रृंखला होती है, हिमालय दिवस हर साल 9 सितंबर को हिमालयी श्लोक तंत्र और क्षेत्र को संरक्षित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। हिमालयी प्रकृति को बचाने और बनाये रखने और प्रतिकूल मौसम की स्थिति से लेकर देश की रक्षा करने में अहम भूमिका है। फूल और वाॅलीज़ियन की जैव विविधता में समृद्ध होने के कारण, हिमालय पर्वतमाला के देशों में वर्षा लाना भी जिम्मेदार है। हिमाचल प्रदेश आम जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने और संरक्षण में साझेदारी के लिए भी एक उत्कृष्ट दिन है। इस वर्ष राष्ट्र 14वाँ हिमालय दिवस मनाया जा रहा है।

यह दिन महामहिम महानुभावों के लिए मनाया जाता है। हिमालयी पहाड़ी शहरों को खराब भवन और डिजाइन, खराब रेस्तरां रेस्तरां जैसे कि सड़कें, जल आपूर्ति, सीवेज आदि और पेड़ों की असमान कटौती के कारण कई कहानियों का सामना करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप गंभीर सार्वभौमिक मुद्दे उत्पन्न होते हैं।

इस दिन इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि पर्यावरण-संवेदनशील पहाड़ी शहरी डिजाइन और विकास को अनिवार्य रूप से विकसित करना आवश्यक है। हिमालय पूरी दुनिया के लिए ताकत का स्रोत और एक मूल्यवान विरासत है। इसलिए इसे संरक्षित करने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक ज्ञान को बढ़ावा देने के अलावा, यह दिन जागरूकता और वैज्ञानिक भागीदारी को बढ़ाने में मदद करता है।

2014 में 9 सितंबर को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री रावत को आधिकारिक तौर पर हिमालय दिवस के रूप में घोषित किया गया था। इस विचार का संकल्प हिमालय पर्यावरण अध्ययन एवं संरक्षण संगठन के अनिल जोशी एवं अन्य भारतीय पर्यावरण निवेशकों ने लिया था। इस पहल का उद्देश्य 9 सितंबर को जम्मू और कश्मीर से लेकर भारत के सभी हिमालयी राज्यों तक जम्मू और कश्मीर में हिमालय दिवस के रूप में मनाना है। इसका कारण यह है कि इन राज्यों में एक समान हिमाचली सामाजिक पहचान है।

Satakshi singh Government degree college Dehradun sehar

इस उत्सव के लिए भारत में किसी भी समय की तारीख में आयोजित किए गए किसी भी समय के लिए कोई महत्वपूर्ण कमी नहीं है। हिमालय दिवस घोषित किये जाने का एक कारण अगस्त 2010 में इस क्षेत्र को प्रभावित करने वाला विनाशकारी विध्वंस हो सकता है। 2013 की विनाशलीला आपदा एक और प्रेरणा हो सकती है क्योंकि यह पहली बड़े पैमाने पर हुई घटना थी जिसमें हिमालयी अलौकिक तंत्र की महिमा को उजागर किया गया था।"

Professor B R Pant M B G P G COLLEGE HALDWANI NAINITAL UTTARAKHAND Geography Professor

Excellent

Mrs. ARUN GOTRA DBS (PG) COLLEGE DEHRADUN Geography Research Scholar All good

9 Dr. Rakesh Prasad DBS(PG) College Dehradun Uttarakhand Geography Assistant Professor

"सबसे पहले मैं ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय का बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहूंगा कि उन्होंने 09 सितम्बर 2023 को हिमालय दिवस पर मुख्य वक्ता के रूप मे प्रोफ़ेसर डॉ जीवन सिंह रावत जी को आमंत्रित किया। सर का व्याख्यान बहुत ही बढ़िया था जिसने हमें यह जानकारी दी कि पर्वतीय जिलों में जिस प्रकार से हमारी छोटी-छोटी सरिताएं एवं नदियां सूख रही हैं वह हमें भविष्य के एक बड़े जल -संकट कि और लेजा रही हैं। सर के व्याख्यान में बहुत बढ़िया तरीके से भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) का प्रयोग करके मानचित्रिकरण प्रदर्शित किया गया था। कुमाऊं मंडल के पर्वतीय जिलों के जो मानचित्र प्रोफेसर साहब द्वारा प्रस्तुत किए गए वह हमारे लिए पथ प्रदर्शक हैं। इससे हम जैसे युवा भूगोलवेताओं को बहुत ऊर्जा और

प्रेरणा मिलती है कि हम भविष्य मे अपने हिमालय शोध कार्य में भौगोलिक सूचना प्रणाली का प्रयोग करके नए मानचित्र प्रस्तुत करें। सेंट्रल हिमालय ज्योग्राफी सोसाइटी का सेमिनार हर बार की तरह इस बार भी सफल रहा। सभी सेमिनार ऑर्गेनाइजरो का बहुत-बहुत धन्यवाद "

Dr. Dr. Bhalchand Singh Negi Govt. P G. College Gopeshwar Chamoli Geography Asisstt. Professor Geography

इस वेबीनार में मार्मिक ज्ञानवर्धक एवं शोध आधारित उत्कृष्ट व्याख्यान प्रस्तुत हुई

Ms. Shivender Kalinga University Geography Research Scholar

हिमालय दिवस पर Geographical society of central Himalaya की और से online webinar का आयोज़न किया गया था! जो की research scholar को आगे बढ़ने में तथा उनके ज्ञान को बढ़ाने में बहुत ही सहायक था GSCH समय समय पर अलग अलग speakers के द्वारा सभी का मार्गदर्शन करवाता रहता है

Mrs. Sarthak juyal Hemvati Nandan Bahuguna garhwal university Bachelor of arts National webinar on Himalayan day "हिमालय केवल बर्फ के पहाड़ की श्रृंखलाभर नहीं, बल्कि यह स्वयं में एक सभ्यता को समेटे हुए है। देश को पानी, हवा व मिट्टी की आपूर्ति करने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है तो जैव विविधता का भी यह अमूल्य भंडार है। ऐसी एक नहीं, अनेक विशिष्टताओं के बावजूद हिमालय और वहां के निवासियों को वह अहमियत अभी तक नहीं मिल पाई, जिसकी अपेक्षा की जाती है। उत्तराखंड समेत हिमालयी राज्यों की यही प्रमुख चिंता है। इसलिए वे विषम परिस्थितियों वाले हिमालयी क्षेत्र को अलग दृष्टिकोण से देखने की पैरवी करते आ रहे हैं। यानी, यहां के विकास का माडल देश के अन्य क्षेत्रों से अलग होना चाहिए। यह तभी संभव है, जब हिमालय के लिए पृथक से व्यापक नीति बने।

हिमालयी क्षेत्र देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 16.3 प्रतिशत क्षेत्र में विस्तार लिए हुए है। इसके अंतर्गत उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, त्रिपुरा व मिजोरम और केंद्र शासित राज्य लद्दाख व जम्मू-कश्मीर हैं। यह हिमालयी क्षेत्र पारिस्थितिकी व पर्यावरण के साथ ही सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। "

Ms. SAYAN MITRA Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University (A Central University), Dr. B.Gopala Reddy Campus, Pauri (Garhwal), Uttarakhand, India Department of Physics M.Sc. (Physics) Fourth Semester Student

इस वेबिनार से हमने इस विशेष दिन (९ सितंबर) के महत्व, मध्य हिमालय और इसके भूगोल के बारे में बहुत कुछ सीखा और वक्ताओं ने बहुत ही सरल भाषा में अपनी बात प्रस्तुत की। हमें उम्मीद है कि हम भविष्य में इस तरह के और अधिक वेबिनार आयोजित करेंगे।

-